

10468 - किताबों और सन्देषाओं पर ईमान लाना

प्रश्न

वो ईश्दूत कौन हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने भेजा है? और वो कौन सी किताबें हैं जिन्हें उनके साथ उतारी हैं?

विस्तृत उत्तर

जब अल्लाह तआला ने आदम को धरती पर उतारा और उनकी संतान फैल गई तो अल्लाह तआला ने उन्हें बेकार नहीं छोड़ दिया, बल्कि उन के लिए जीविका का प्रबंध किया, आदम अलैहिस्सलाम और उनकी संतान पर वह्य (ईश्वाणी) अवतरित की। चुनाँचि उन में से कुछ ईमान लाये और कुछ ने कुफ्र का रास्ता अपनाया : "और हम ने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा कि (लोगो!) केवल अल्लाह की उपासना करो और तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त सभी झूठे पूज्यों) से बचो। तो कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत (मार्गदर्शन) प्रदान किया, और कुछ पर गुमराही साबित हो गई।" (सूरतुन-नह्ल: 36)

अल्लाह तआला ने जिन आसमानी किताबों को उतारा है, वो चार हैं, और वे तौरात, इंजील, ज़बूर और कुरआन करीम हैं : "जिस ने हक्क के साथ इस किताब (पवित्र कुर्�आन) को उतारा, जो अपने से पहले के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने (इस से पहले के धर्मग्रन्थ) तौरात और इंजील को उतारा।" (सूरत आल-इम्रान :3)

तथा अल्लाह तआला ने फरमाया : "और हम ने दाऊद को (धर्मग्रन्थ) ज़बूर प्रदान किया।" (सूरतुल इस्ला :55)

ईश्दूतों और सन्देषाओं की संख्या बहुत अधिक है और उनकी निश्चित गिन्ती का ज्ञान केवल अल्लाह तआला को है, उन में से कुछ के हालात से अल्लाह तआला ने हमें अवज्ञत कराया है और कुछ के हालात का हम से उल्लेख नहीं किया है : "और आप से पहले के बहुत से रसूलों के वाकिआत हम ने आप से बयान किये हैं, और बहुत से रसूलों के हालात हम ने आप से बयान नहीं किये हैं।" (सूरतुन्निसा :164)

अल्लाह तआला की उतारी हुई सभी किताबों और अल्लाह के भेजे हुए सभी ईश्दूतों और सन्देषाओं पर ईमान लाना (विश्वास रखना) अनिवार्य है, जैसाकि अल्लाह सुब्हानहु व तआला का फरमान है : "हे ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल और उस किताब (कुरआन) पर जिसे उस ने अपने रसूल पर उतारी है और उन किताबों पर ईमान लाओं जो इस से पहले उतारी गयी, और जो अल्लाह और उस के फरिश्तों और उसकी किताबों और उस के रसूलों और क्रियामत के दिन को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।" (सूरतुन्निसा :136)

रसूल और नबी (ईश्दूत और सन्देषा) एक ही अस्तित्व के दो नाम हैं जिस से अभिप्राय वह व्यक्ति है जिसे अल्लाह ने लोगों को मात्र एक अल्लाह की उपासना की ओर आमन्त्रण देने के लिए भेजा हो, इन नबियों और रसूलों को अल्लाह तआला ने चुन करके उन्हें

अपने बन्दों की तरफ अपने धर्म के प्रसार के लिए भेजा है : "(हम ने इन्हें) शुभसूचना देने वाला और डराने वाला रसूल बनाया, ताकि लोगों को रसूलों के भेजे जाने के बाद अल्लाह तआला पर कोई बहाना न रह जाये।" (सूरतुन्निसा :165)

ईश्दूतों और सन्देषाओं की संख्या बहुत अधिक है, जिन में से पचीस का अल्लाह तआला ने कुर्�आन में उल्लेख किया है, अतः उन सब पर ईमान लाना अनिवार्य है और वे आदम, इदरीस, नूह, हूद, सालेह, इब्राहीम, लूत, इसमाईल, इसहाक, याकूब, यूसुफ, शुऐब, अय्यूब, ज़ुल किफ़ल, मूसा, हारून, दाऊद, सुलैमान, इलयास, अल-यसअ, यूनुस, जकरिया, यह्या, ईसा और मुहम्मद हैं, इन सब पर अल्लाह की दया और शांति अवतरित हो।

कुर्�आन करीम, आसमानी किताबों में सब से महान, सब से अंतिम और अपने से पूर्व किताबों को निरस्त करने वाली और उनके ऊपर संरक्षक है, अतः इस पर ईमान लाना और इस के अतिरिक्त किताबों को त्यगना अनिवार्य है : "और हम ने आप की ओर सच्चाई के साथ यह पुस्तक उतारी है जो अपने से पूर्व (अगली) पुस्तकों की पुष्टि (प्रमाणित) करने वाली है और उन पर संरक्षक और शासक है। इसलिए आप उन के बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के ऐतिबार से फैसला कीजिए।" (सूरतुल-माईदा: 48)

अल्लाह तआला ने आदम की औलाद से ईश्दूतों और पैगंबरों को चयन कर लिया है और उन्हें प्रत्येक समुदाय में भेजा है, और उन्हें केवल एक अल्लाह की इबादत करने की ओर लोगों को बुलाने, उन धर्मशास्त्रों को स्पष्ट करने के लिए जिस में लोक परलोक का सौभाग्य है, ईमान लाने वाले के लिये स्वर्ग की शुभसूचना देने और कुफ्र करने वाले को नरक से डराने के लिए भेजा है : "और हम ने प्रत्येक समुदाय में रसूल भेजा कि (लोगो!) केवल अल्लाह की उपासना करो और तागूत (अल्लाह के अतिरिक्त सभी द्वृठे पूज्यों) से बचो। तो कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत (मार्गदर्शन) प्रदान किया, और कुछ पर गुमराही साबित हो गई।" (सूरतुन-नह्ल: 36)

अल्लाह तआला ने कुछ ईश्दूतों और पैगंबरों को कुछ पर फज़ीलत (प्रतिष्ठा और श्रेष्ठता) प्रदान की है, चुनाँचि उन में सर्वश्रेष्ठ ऊलुल अज़म (सुदृढ़ संकल्प वाले) पैगंबर हैं और वे नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा और मुहम्मद अलैहिमुस्लातो वत्स्लीम हैं, और ऊलुल अज़म में सब से श्रेष्ठ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं। प्रत्येक पैगंबर विशिष्ट रूप से अपनी क़ौम की ओर भेजा जाता था यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सर्व मानव जाति की ओर पैगंबर बनाकर भेजा, और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंतिम और सबसे श्रेष्ठ ईश्दूत और पैगंबर हैं, जैसाकि अल्लाह अज़ज़ा व जल्ल ने आप के बोर में फरमाया है : "हम ने आप को समस्त मानव जाति के लिए शुभ सूचना देने वाला तथा डराने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन (यह सच्च है कि) अधिकतर लोग नहीं जानते।" (सुरत सबा :28)

ईश्दूतों और सन्देषाओं को अल्लाह तआला ने चुन लिया है और उन्हें उनके समुदायों के लिए आदर्श बानाया है, तथा उनका प्रशिक्षण किया है, उन्हें व्यवहार और शिष्टाचार से सुसज्जित किया है, ईश्दूतत्व से सम्मानित किया है, पापों और अवज्ञाओं में पड़ने से सुरक्षित कर दिया है और चमत्कारों के द्वारा उनका समर्थन किया है। चुनाँचि वे रचना और सद्व्यावहार के ऐतिबार से लोगों में सब से संपूर्ण, सर्वाधिक ज्ञान वाले, सब से सच्ची बात वाले और सब से पवित्र आचरण वाले हैं, अल्लाह तआला उनके बारे में फरमाता है : "और हम

ने उन्हें इमाम बना दिया कि हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करें और हम ने उनकी तरफ नेक अमल करने और नमाज़ क्रायम करने और ज़कात देने की वह्य (ईश्वरीणी) की और वे सब के सब हमारे पुजारी थे।" (सूरतुल अंबिया :73)

जब ईश्दूतों और पैगंबरों का सत्कर्म, नेकी और सद्व्यवहार में इतना ऊँचा पद और स्थान है तो इसी कारण अल्लाह तआला ने हमें उनका अनुसरण करने का आदेश दिया है, चुनाँचि अल्लाह तआला ने फरमाया : "यही लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने शुद्ध मार्ग दर्शाया, इसलिए आप उनके रास्ते की पैरवी करें।" (सूरतुल अंआम :90)

हमारे पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अंदर सभी ईश्दूतों और सन्देषाओं के गुण और विशेषण एकत्रित हो गये हैं, और अल्लाह तआला ने आप को महान सद्व्यवहार और शिष्टाचार से सम्मानित किया है, इसी कारण अल्लाह तआला ने आप के सभी अह्वाल में आप की पैरवी करने का हुक्म दिया है : "निःसन्देह तुम्हारे लिए पैग़म्बर के जीवन में सर्व श्रेष्ठ आदर्श है, हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और क्रियामत के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को अधिक याद करता है।" (सूरतुल-अह्ज़ाब: 21)

सभी ईश्दूतों और सन्देषाओं पर ईमान लाना और विश्वास रखना इस्लामी आस्था (अङ्गीदा) के स्तंभों में से है जिस पर विश्वास रखे बिना मुसलमान का ईमान संपूर्ण नहीं हो सकता, क्योंकि वे सब एक ही अङ्गीदा की दावत देते हैं और वह अल्लाह तआला पर ईमान लाना है। अल्लाह तआला फरमाता है : "(ऐ मुसलमानों!) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर भी जो हमारी तरफ उतारी गई और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और उनकी ऐलाद पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की तरफ से मूसा, ईसा, और दूसरे नबियों को दिया गया, हम उन में से किसी के बीच अंतर (भेदभाव) नहीं करते, और हम अल्लाह ही के ताबेदार हैं।" (सूरतुल बक़रा:136)